IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# राजस्थान के धार्मिक आंदोलन में दादू के योगदान का ऐतिहासिक अध्ययन

**दिनेश कुमार कुम्हार**

**सहायक आचार्य इतिहास**

**(विद्या संबल योजना)**

**राजकीय महाविद्यालय, रैणी, राजगढ़, (अलवर), राजस्थान**

**सारांश**

कबीर के शिष्यों की उत्तरवर्ती पीढी में सबसे प्रसिद्ध संत दादू दयाल थे। अहमदाबाद में जन्मे दादू का अधिकांश समय राजपूताना में ही व्यतीत हुआ। दादू के संदेश में दया, नमता एवं क्षमा स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है। दादू का संदेश हिन्दूधर्म या इस्लाम के धर्मिक पूर्वाग्रहों से सर्वथा मुक्त है। उन्होंने सभी धर्मो की आधारभूत एकता एवं भाईचारे पर बल दिया। अपने महान् गुरु कबीर की भांति दादू भी हिन्दू मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधर थे और ईश्वर, धर्म, कर्मकाण्ड एवं धार्मिक औपचारिकताओं, मूर्तिपूजा, जातियों महन्तों–पंडों, अवतारवाद, तीर्थयात्रा आदि के बारे में भी उनके विचार कबीर के जैसे ही थे। उन्होंने जो पंथ चलाया, वह 'दादूपंथ' के नाम से प्रसिद्ध है। उनकी मृत्यु के बाद उनके शिष्यों–गरीबदास एवं माधोदास ने उनके उपदेशों का प्रचार–प्रसार का महती प्रयास किया।

**शब्द कुजी :–** धार्मिक, विचारधारा, राजनीति, सामाजिक, चेतना, आन्दोलन।

## परिचय

भक्त संतों की वाणी ने भक्ति को लोकप्रिय बनाया तथा मध्ययुगीन विचारधारा को मोड़ देने का प्रयास किया, यद्यपि वे अपनी कोशिश में सफल नहीं हुए। कुछ संतों ने साझा मंच तैयार किया, जिस पर विभिन्न संप्रदायों और धर्मो के लोग मिल सकते थे। इन संर्ता के प्रयासों से ही क्षेत्रीय भाषाओं में उच्च कोटि की रचनाएं लिखी गयी। इन संतों ने समाज एवं धर्म में व्याप्त रुढिवादी तत्वों को पहचाना तथा लोगों के सामने उन्हें बेपर्दा किया तथा उदार एवं रुढिवादी प्रवृत्तियों के बीच संघर्ष को तीव्र किया। यद्यपि रुढिवादी ताकतें कमजोर न हो सकी, परन्तु लोगों ने सिक्के के दूसरे पहलू को भी देखा। ये संत जाति व धर्म की सीमाओं एवं बंधनों से परे साबित हुए और इसी कारण इनको व्यापक समर्थन भी मिला। इन संत कवियों का दृष्टिकोण मानवतावादी थी। उन्होंने सर्वोच्च मानव भावनाओं सभी रूपों में सुन्दरता एवं प्रेम की भावनाओं पर बल दिया।

## अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य धार्मिक आन्दोलन मे संत दादू दयाल के योगदान का अध्ययन करना हैं।

### शोध विधि व उपकरण

इस शोध पत्र से संबंधित तथ्यों एवं सूचनाओं को एकत्रित करने के पुस्तकों, पत्र पत्रिकाओं के लेखो, समाचार पत्रों, शोध प्रबंधों के माध्यम से द्वितीयक स्त्रोत सामग्री प्राप्त की गयी।

### साहित्यावलोकन

संत दादू दयाल की साधना देश और काल की ही साधना है। हर संत, अपने युग को एक आवाज देता है। संत दादू दयाल का आविर्भाव भारतीय समाज में उस समय हुआ जब संपूर्ण उत्तरी भारत पर मुगल साम्राज्य की स्थापना हो चुकी थी। बचपन से ही सामाजिक विषमता व आर्थिक विपन्नता से इनकी सोच को गहराई से प्रभावित किया। संत दादू दयाल अहिंसक क्रांति भावना द्वारा राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक आदि क्षेत्रों में क्रांति पैदा करना चाहते थे। संत दादू दयाल ने सामाजिक विषमता व धर्म को अकर्मण्यता से हटाकर कर्म योग की भूमि पर टिकाया था और उसे सहज बनाकर सर्वसाधारण के लिए ग्राह्य बनाया। उन्होंने किसी भी धार्मिक विश्वास, लोक तथा वेद के अन्धानुकरण को स्वीकार नहीं किया, बल्कि विवेक से उन धर्मों, विश्वासों तथा पाखण्ड़ों को अपनी ध्वंसात्मक भूमिका से तहस–नहस करके ही दम लिया। हिन्दू धर्म के आचार बाहुल्य अर्थात् उनकी पूजा, उत्सव, वेदपाठ, तीर्थयात्रा, व्रत, छूआछूत, अवतारोपासना तथा कर्मकाण्ड पर संत दादू दयाल ने निरंतर व्यंग्य किया। उनके वाणी में शील, क्षमा, समानता, दया, दान, धैर्य, संतोष आदि मानवीय गुणों का विशेष स्थान है। भक्ति आन्दोलन के इतिहास में जितनी महत्ता कबीरदास, नानक और रैदास आदि को मिली है, उतनी प्रमुखता संत दादू दयाल और उनके विचारों को नहीं मिली है लेकिन इस वजह से संत दादू दयाल के योगदान को कम नहीं किया जा सकता है।

भक्ति आन्दोलन की जो चिनगारी दक्षिण भारत में आलवार व नायनार संतों ने सुलगाई थी उसकी प्रज्ज्वलित लपटें कुछ शताब्दियों में संपूर्ण भारत में फैल गई। इस ज्योति को राजस्थान में उजास फैलाने का कार्य संत दादू दयाल ने किया। संत दादू दयाल ने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्रों, मुस्लिम संप्रदाय को भक्ति के रंगमंच पर एक साथ लाकर समाज में अद्भूत सामंजस्य स्थापित किया। दादू का जीवन–वृत्त–राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन को गति प्रदान करने वाले सन्तों में मौरा की दादू का विशिष्ट स्थान है। सन्त दादू का जन्म 1544 ई. में अहमदाबाद में हुआ था। दादू की । इनमें से जाति के विषय में विद्वानों में काफी मतभेद है।

आचार्य क्षितिज मोहन सैन, डॉ. मोतीलाल आजकल मेनारिया, विल्सन आदि विद्वान उन्हें धुनिया मुसलमान बताते हैं। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, चाल की डॉ. पीताम्बर दत्त भी दादू को मुसलमान मानते हैं। डॉ. सुधाकर द्विवेदी के अनुसार दादू मोची जाति के थे तथा कमाल के शिष्य थे। परन्तु दादूपंथी उनकी जाति के बारे में मौन हैं। दादूपंथियों । उसकी का कहना है कि दादू बच्चे के रूप में साबरमती नदी में बहते हुए लौदीराम नामक एक नागर के लिये गह्मण को मिले थे तथा उन्होंने ही दादू का पालन–पोषण किया था। सात वर्ष की आयु में ही जागू, जग दादू का विवाह कर दिया गया। जब वे 11 वर्ष क्ले थे तब अचानक उनकी भेंट ब्रह्मानन्द नामक है जब उसे एक सन्त से हुई, जिसने दादू को आध्यात्मिक ज्ञान दिया। डॉ. त्रिगुणायत, डॉ. ताराचन्द आदि राम रतन कुछ विद्वान दादू को कमाल का शिष्य मानते हैं परन्तु दादूपन्थी इन्हें बुद्धानन्द का शिष्य मानते । उनके अनुसार दादू ने दीक्षा भी इन्हीं से ली थी। तो गिरधर दादू एक सन्त के रूप में–दादू के प्रारम्भिक 25 वर्ष के जीवन के कार्यों की जानकारी नहीं जाती है।

### दादू का जीवन–वृत्त

राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन को गति प्रदान करने वाले सन्तों में की दादू का विशिष्ट स्थान है। सन्त दादू का जन्म 1544 ई. में अहमदाबाद में हुआ था। दादू की । इनमें से जाति के विषय में विद्वानों में काफी मतभेद है। आचार्य क्षितिज मोहन सैन, डॉ. मोतीला मेनारिया, विल्सन आदि विद्वान उन्हें धुनिया मुसलमान बताते हैं। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, चाल की डॉ. पीताम्बर दत्त भी दादू को मुसलमान मानते हैं। डॉ. सुधाकर द्विवेदी के अनुसार दादू मोची जाति के थे तथा कमाल के शिष्य थे। परन्तु दादूपंथी उनकी जाति के बारे में मौन हैं। दादूपंथियों । उसकी का कहना है कि दादू बच्चे के रूप में साबरमती नदी में बहते हुए लौदीराम नामक एक नागर के लिये गह्मण को मिले थे तथा उन्होंने ही दादू का पालन–पोषण किया था। सात वर्ष की आयु में ही जागू, जग दादू का विवाह कर दिया गया। जब वे 11 वर्ष क्ले थे तब अचानक उनकी भेंट ब्रह्मानन्द नामक है जब उसे एक सन्त से हुई, जिसने दादू को आध्यात्मिक ज्ञान दिया। डॉ. त्रिगुणायत, डॉ. ताराचन्द

आदि राम रतन कुछ विद्वान दादू को कमाल का शिष्य मानते हैं परन्तु दादूपन्थी इन्हें बुद्धानन्द का शिष्य मानते की चरमई। उनके अनुसार दादू ने दीक्षा भी इन्हीं से ली थी।

**दादू एक सन्त के रूप में**

दादू के प्रारम्भिक 25 वर्ष के जीवन के कार्यों की जानकारी नहीं जाती है। बेलती। सम्भवतः गुरु की दीक्षा लेकर उन्होंने घर छोड़ दिया। वे जगह–जगह घूमने लगे और बना प्रियतम वा की आराधना में समय व्यतीत करने लगे। इस काल में ही वे सिरोही, जैसलमेर, कल्याणपुर यी। उसकी वं अजमेर गये। इस भ्रमण के बाद 1568 ई. में सांभर आ गये और वहाँ ही रहने लगे।

सत्संग का स्थल 'अलख–दरीबा' के नाम से विख्यात हुआ, लेकिन भविष्य में ब्रहा सम्प्रदाय के रूप में विख्यात हुआ और कालान्तर में इसी को दादूपंथ की संज्ञा दी गई है है। दुर्भाग्यवश दादू को साँभर शीघ्र ही छोड़नी पड़ी; क्योंकि यहाँ के मुसलमानों ने उन्हें जबरन अपना अनुयायी बनाने का प्रयास किया। इसके बाद 14 वर्षों तक वे अजमेर में र रहे। फिर दादू फतेहपुर सीकरी गये जहाँ सम्राट अकबर से भेंट हुई। 1602 ई. में वे आमेर के पास नरायणा गाँव में बस गये और 1605 ई. में इसी गाँव में उनकी मृत्यु हो गई।

**दादू के उपदेश**

दादूदयालजी विशेष पढ़े–लिखे नहीं थे, परन्तु उन्होंने साधु–सन्तों के संसर्ग में रहकर सुना बहुत कुछ था अतः अपने प्रवचनों के रूप में अपने अनुयायियों को जो कुछ भी कहा वह अपने अनुभव के आधार पर कहा। दादूजी अपने उपदेश गद्य व पद्य दोनों में ही देते थे।

**दादू के शिष्य**

दादू की शिष्य–परम्परा में वैसे तो 152 शिष्य माने जाते हैं परन्तु इनमें 52 शिष्य काफी महत्त्वपूर्ण माने गए हैं और वे दादूपंथ के 'बावन स्तम्भ' के नाम से पुकारे जाते हैं। इन शिष्यों में सुन्दरदास, बलनाथजी तथा रज्जवजी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके शिष्यों में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा मुसलमान सभी सम्मिलित थे।

**दादू के दार्शनिक एवं धार्मिक विचार**

सन्त दादू एक अच्छे कवि थे। उनके विचार 'दादूदयाल की वाणीश तथा श्दादू का दूहा' नामक रचनाओं में संकलित किए गए हैं। इनके अध्ययन से हमें दादू के विचारों और सिद्धान्तों के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। उन्होंने अपने विचार सरल भाषा में व्यक्त किये ताकि सामान्य लोग गूढ़ बातों को सरलता से समझ सकें। उनका कहना था कि ईश्वर परब्रह्म, परम ज्योति रूप तथा माया से परे है। वह सर्वव्यापी तथा सर्वशक्तिमान है। विश्व की प्रत्येक वस्तु उसी की शक्ति से. गतिमान है। समस्त सृष्टि उसी ब्रह्म पर आधारित है। जीव ब्रह्म का ही एक रूप है परन्तु वह माया के वशीभूत होने के कारण ब्रह्म से दूर हो गया है। जीव कमों से बँधा हुआ है परन्तु ब्रह्म कर्मों के बन्धन से मुक्त है। कमों के बन्धन को काट कर जब जीव ईश्वर में लीन हो जाता है तब उसमें और ब्रह्म में कोई अन्तर नहीं रह जाता। उस स्थिति में आत्मा और परमात्मा एक हो जाते हैं।

दादू के अनुसार जीव और ब्रह्म को अलग करने वाली शक्ति 'माया' है। माया के कारण मनुष्य सांसारिकता में फँसा रहता है। कंचन और कामिनी माया के प्रतिनिधि हैं जो मनुष्य को अपने बन्धन में जकड़े रहते हैं। दादू के अनुसार ब्रह्म की प्राप्ति में मन सबसे बड़ा बाधक है जो चारों दिशाओं में घूमता रहता है; परन्तु जब मन पर नियन्त्रण कर लिया जाता है तो ब्रह्म से मिलन हो जाता है। दादू के अनुसार पाँच तत्त्वों–पृथ्वी, जल, वायु, आकाश और अग्नि से बना यह जगत तथा जीव मिथ्या है, सत्य केवल ब्रह्म है और मनुष्य को उसी की प्राप्ति के लिए प्रयल करना चाहिए। ज्ञान प्राप्ति व सिद्धि के लिए दादू गुरु का मार्गदर्शन अनिवार्य मानते थे। उनका कहना था कि गुरु ही अज्ञानता का अन्धकार दूर सकता है तो वही शिष्य को भवसागर से पार भी लगा सकता है। गुरु के उपदेश का पालन करने पर ब्रह्म की प्राप्ति सम्भव है।

### दादू का साधना पक्ष

दादू निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे। अतः उनकी साधना निर्गुण ब्रह्म की प्रधानता को लेकर है। उनके अनुसार आत्मज्ञान, अहंकार परित्याग, संयम, नियम, हरि–स्मरण, अन्तर्ध्यान आदि उपासना के सच्चे साधन हैं। दादू ने अहंकार को बहा–प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधा बतलाया तथा अहम् के त्याग के लिए मन के निमह पर बल दिया। मन को ब्रह्म में लगाने के लिए दादू ने साधु–संगति और हरि–स्मरण पर बल दिया।

### दादू के सामाजिक विचार

कबीर की भाँति सन्त दादू ने सामाजिक कुरीतियाँ, पाखण्डों, ड़ियों और आडम्बरों का विरोध किया। उन्होंने जातिप्रथा तथा ऊँची–नीच के भेद–भाव का आदार खण्डन किया। उन्होंने ईश्वर की एकता पर बल देते हुए कहा कि ईश्वर एक है जिसके दरबार में हिन्दू–मुसलमानों का कोई भेद–भाव नहीं है। उन्होंने तीर्थयात्रा का विरोध किया और कहा कि जब प्रत्येक मनुष्य के मन में ईश्वर का विश्वास है तो फिर उसे ढूँढ़ने के लिए तीर्थ– शथानों पर जाना निरर्थक है। उन्होंने मस्जिद में जाना, रोजे रखना और नमाज पढ़ने को व्यर्थ बतलाया। कबीर की भाँति उन्होंने भी विविध पूजा–पद्धतियों का खण्डन किया। जात–पाँत के भेद–भाव को भी वे व्यर्थ समझते थे। वे हिन्दू–मुसलमान दोनों को ईश्वर की सन्तान मानते थे । उन्होंने नैतिकता, हृदय की विशालता, पवित्र आचरण, प्रेम, दया और परोपकार आदि गुणों को बहण करने पर बल दिया। उन्होंने सत्य और सरल जीवन व्यतीत करने पर बल दिया।

### दादू की भाषा

दादू ने जनसाधारण की भाषा के माध्यम से अपनी शिक्षाओं का प्रचार किया। डॉ. गोपीनाथ शर्मा का कथन है कि सबसे बड़ी विशेषता जो दादू ने प्रचार के लिए की है, यह भाषा है। जैसे वातावरण या स्थान विशेष में प्रचार की आवश्यकता हुई, दादू ने वैसी ही भाषा का प्रयोग किया । राजस्थान में, जो उनके पंथ का केन्द्र था और जहाँ उन्हें विशेष आना– बाना पड़ा था, उन्होंने ढूँढारी भाषा को अपनाया। उनकी भाषा में गुजराती, पश्चिमी हिन्दी तथा कुछ पंजाबी शब्दों का प्रयोग भी दिखाई देता है। उन्होंने आम जनता के लिए अपने विचारों को समझाने के लिए पंजाबी, रेख्ता और फारसी से मिश्रित भाषा को अपनाया। हिन्दी के अन्त–साहित्य में दादूजी की वाणी का इसलिए एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

दादूपंथ के प्रमुख सिद्धान्त–दादूपंथ के प्रमुख सिद्धान्त –

(1) दादू के अनुयायियों को अविवाहित रहना पड़ता है।

(2) दादूपंथी किसी गृहस्थी के लड़के को गोद लेकर अपना शिष्य बनाते हैं और सद्‌वारों में रहते हैं।

(3) दादूपंथी मन्दिर व मस्जिद में उपासना के लिए नहीं जाते हैं। वे न तिलक लगाते हैं, र माला पहनते हैं, और न सिर पर चोटी ही रखते हैं।

(4) दादूपंथी नगरों में निवास न कर दादूद्वारों में निवास करते हैं।

(5) दादूपंथी अपने साथी के मर जाने पर न तो जलाते हैं और न ही दफनाते हैं वरन् उसे के चारपाई पर डालकर जंगल में पशु–पक्षियों के खाने के लिए छोड़ देते हैं।

दादूपंव की शाखाएँ–

1750 ई. के पश्चात् दादूपंथ पाँच शाखाओं में विभाजित हो गया, संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

(1) खालसा नरायणा दादूजी का प्रमुख स्थान रहा। इस शिष्य–परम्परा वाले कहलायायाय के अनुयायी कानों तक टोपी तथा चोला धारण करते हैं। ये ऐन तथा वख लोगों से भिक्षा में प्राप्त करते हैं।

(2) विरक्त–इस सम्प्रदाय के दादूपंथी एक स्थान पर नहीं टिकते। ये लोग एक स्थान सारे स्थान को महादा लोग पहरमों को दादूजी की श्वाणीश का उपदेश देते हैं। से ये जीवन–निर्वाह करते हैं।

उत्तरोद–दादू के एक शिष्य बनवारीदास हरियाणा की तरफ चले गए और रहिया नामक स्थान पर अपनी गद्दी स्थापित की। उनके अनुयायी साधु उत्तरोद कहलाये ।

(4) खाकी–कुछ ऐसे दादूपंथी साधु, जो शरीर पर भस्म लगाते हैं, सिर पर बड़ी–बड़ी जटाएँ रखते हैं और छोटी–छोटी टुकड़ियों में रहते हैं, वे खाकी दादूपंथी कहलाते हैं।

(5) नागा–इस सम्प्रदाय की स्थापना करने वाले सुन्दरदासजी थे। इस सम्प्रदाय के लोग सेना में भर्ती होना पसन्द करते थे तथा वे छावनियों में निवास करते थे। राजस्थान के नरेश उन्हें अपनी सेना में भर्ती करना पसन्द करते थे। इनके नाम पर सैनिक टुकड़ी 'नागा फौज' कहलाती थी।

**निष्कर्षः–** सन्त दादू ने राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने भी कबीर की भाँति मूर्तिपूजा, जात–पाँत, तीर्थयात्रा, जादू–टोने, हिन्दू–मुसलमान के भेदभाव आदि का खण्डन किया और ईश्वर की एकता, प्रेम–भाव, भक्ति की तन्मयता, गुरु की महिमा आदि पर बल दिया। उन्होंने सम्पूर्ण मानव जाति की भलाई पर जोर दिया। मध्यकालीन निर्गुणभक्ति धारा में प्रचलित एवं प्रशंसित जितने भी रूप हैं। वे सब सामाजिकता की भावना से ओतप्रोत है। कबीर, नानक एवं रैदास आदि संतों की भांति मध्ययुगीन भारतीय समाज की धार्मिक एवं सामाजिक दशा को सुधारने, भक्ति का प्रसार करने एवं भक्ति आंदोलन के द्वारा समाज में एक नयी चेतना सृजित करने में संत दादूदयाल का योगदान भी अतुलनीय रहा है। उत्तरी भारत में भक्ति भाव को प्रतिष्ठापित करने में दादू का महत्व कबीर व नानक के समान है। मध्ययुगीन समाज में जिन परिस्थितियों में सन्त दादू दयाल का आविर्भाव हुआ और जिन राजनीति, सामाजिक एवं धार्मिक विकृतियों का सामना इन्हें करना पड़ा उसके कारण उनके व्यक्तित्व एवं काव्य को विशेष दृष्टि मिली है। समाज में व्याप्त रूढ़ियों और अन्धविश्वासों का खण्डन एवं मानव एकता तथा सहअस्तित्व की भावना को जाग्रत करना ही संत दादू दयाल के समाज दर्शन का मुख्य उद्देश्य रहा है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. स्वामी मंगलदास– दादू वाणी, साखी–172
2. स्वामी मंगलदास– दादू वाणी, आपा को अंग–12, साखी–137
3. सिंह, रविन्द्र कुमार, "दादू काव्य की प्रासंगिकता"
4. चतुर्वेदी, परशुराम, उत्तरी भारत की संत परम्परा
5. शर्मा, वासुदेव, "संत कवि दादू और उनका पंथ"
6. दादू दयाल की वाणी, वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग, भाग–1
7. राजवंशी, डॉ. बलदेव (सं.) "दादू ग्रंथावली", नई दिल्ली, (प्रकाशन संस्थान) 2005, भूमिका
8. चतुर्वेदी, परशुराम, "दादू दयाल ग्रंथावली"
9. पांडे, प्रो. श्रीनिवास, "समत्वबोध एवं संत दादूदयाल जी का संदेश", प्रज्ञा पत्रिका, पृ. 1 वाराणसी
10. पांडेय, अरुण कुमार, "संत दादू और उनकी सामाजिक दृष्टि" वैचारिकी, जनवरी– फरवरी 2014
11. सिंह, रविन्द्र कुमार दादू काव्य की प्रासंगिकता
12. दादू दयाल की वाणी, वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग, भाग–1
13. पांडेय, अनिल कुमार, "दादू दयाल की वाणीः समय और समाज मीरायन", मार्च–मई 2016
14. चतुर्वेदी, परशुराम, "दादू दयाल ग्रंथावली" पद 29